

तथा दि. 02.02.20 को लखनऊ के प्रज्ञा लॉज में 'मानव की अनिवार्य यात्रा' विषय पर चर्चा किया/वार्ताएं दिया।

- बंधु उमाशंकर पाण्डेय फेडरेशन अध्यक्ष ने दि. 31.01.20 और 01.02.20 को गाजियाबाद में 'उपनिषद तथा ताओ-ते-किंग' के कुछ अंशों पर एक दो-दिवसीय अध्ययन शिविर का संचालन किया। एक निर्देशित सामूहिक ध्यान का अभ्यास भी कराया गया। उन्होंने दि. 24.02.20 को दिल्ली फेडरेशन में 'जीवन के प्रति स्वयं पर विश्वास' विषय पर एक-दिवसीय अध्ययन शिविर का संचालन किया। उनके द्वारा दि. 05.02.20 को भोपाल में थिऑसोफिकल स्कूल के छात्रों के बीच 'विचार शक्ति और इसका प्रयोग' विषय पर, उसी दिन उसी स्कूल के शिक्षकों के बीच 'थिऑसोफी और थिऑसोफिकल सोसाइटी' विषय पर, दि. 07-08.02.20 को तेलुगु फेडरेशन के विशाखापतनम लॉज में 'प्रयोगात्मक और व्यावहारिक थिऑसोफी' तथा 'उपनिषदों की शिक्षा में अन्तर्दृष्टि', दि. 09.02.20 को राजा मुन्द्री लॉज में 'गुप्त संहिता' विषय पर, दि. 10-11.02.20 को रायलसीमा फेडरेशन के गुन्टूर लॉज में 'दि सिक्रेट डॉक्टरीन में शिव' तथा 'हृदय और नेत्र का सिद्धान्त' विषय पर, कर्नाटक फेडरेशन के बंगलोर स्थित लॉजों में दि. 13.02.20 को विजयनगर लॉज में 'दि सिक्रेट डॉक्टरीन में शिव' विषय पर, दि. 16.02.20 को बंगलोर सिटी लॉज में 'संघर्षमुक्त जीवन के लिए सम्पूर्ण शिक्षा' विषय पर आयोजित गोष्ठी में, दि. 17.02.20 को मल्लेश्वरम् लॉज में 'मूर्तिपूजा और जीवन्त प्रतिमाएं' तथा दि. 18.02.20 को 'पारमिताएं' विषयों पर वार्ताएं दिया। उन्होंने दि. 21.02.20-23.02.20 के बीच मद्र/राजस्थान फेडरेशन के उज्जैन लॉज में 'सजगता द्वारा स्वरूपान्तरण' विषय पर तीन दिवसीय अध्ययन शिविर का संचालन किया तथा दि. 22.02.20 को उज्जैन में 'स्वप्रबन्धन' विषय पर एक सार्वजनिक व्याख्यान दिया।
- दि. 22.03.20-24.03.20 के बीच कानपुर में 'ब्रह्मविद्या की प्रथम पुस्तक' पर अध्ययन शिविर आयोजित हुआ।

भविष्य में आयोजित होने वाले कुछ विशेष कार्यक्रम

- लॉकडाउन के कारण भविष्य में होने वाले कार्यक्रम अगली सूचना तक रद्द कर दिए गए हैं।

संकलन/सम्पादन

उमाशंकर पाण्डेय, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड फेडरेशन
सहयोग : राजेश गुप्ता, धर्म लॉज, लखनऊ

उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड फेडरेशन – थिऑसोफिकल सोसाइटी
पत्रक

Vol 12	जनवरी-मार्च 2020	No.2
वर्ष 2019-20 का मुख्य विषय		
'जीवन एक महान शिक्षक है'		

'भय से मुक्ति'

मनुष्य की नकारात्मक भावना में भय का एक स्थान है। भय के लक्षण तनाव, कमजोरी, पेट में खालीपन, कम्पन्न इत्यादि के रूप में प्रकट होते हैं। जब एक किसी खतरे से ये लक्षण प्रकट नहीं होते हैं तो वह व्यक्ति या तो खतरे के प्रति उदासीन है या केवल चिन्तित है किन्तु डरा हुआ नहीं है। चिन्ता और भय के बीच स्पष्ट अंतर करना कठिन है। चिन्ता वास्तव में एक करुणामय आवेग है जो दूसरों के दुख को रोकना या कम करना चाहता है। यह हमारे उच्च स्वभाव से आता है। इसलिए स्वकेन्द्रित नहीं होता। दूसरी तरफ भय एक व्यक्तिगत तनाव के साथ स्वयं के बचाव के लिए एक प्रतिक्रिया होती है। चिन्ता से व्यक्तिगत अप्रसन्नता नहीं होती है किन्तु भय से होती है।

भय को हमें संभालना पड़ता है। भय बाहरी वास्तविकता के हमारे अनुभव को बिगाड़ता है, निर्णय की दृढ़ता को प्रभावित करता है, अप्रसन्नता लाता है तथा अहं के बचाव को दृढ़ करते हुए आध्यात्मिक जागृति में प्रतिरोध उत्पन्न करता है।

भय का सामना करने के लिए दो चीजों का महत्व है; 1. भय की तीव्रता और 2. हमारी आंतरिक संकल्पशक्ति। तीव्र भय में हमें स्वयं उत्पन्न प्रतिक्रियाओं को विफल करना पड़ता है। भय की प्रतिक्रिया मूलतः विवेकरहित होती है और यह आसानी से हमारे व्यावहारिक वृत्तियों पर हावी हो जाती है। इस स्तर के भय को स्वसजगता द्वारा हटाने की विधि अत्यन्त प्रभावशाली होती है। भय को टालने से वह समाप्त नहीं होता। अरस्तु ने कहा था कि जिससे तुम डरते हो उससे तुम घृणा करोगे। ऐसे लोग जो कॉक्रोच से डरते हैं उनमें कॉक्रोच को मारने की वृत्ति स्वतः उत्पन्न हो जाती है। कदाचित यह हमारे बीच में तमाम तरह की सामाजिक हिंसाओं की जड़ है।

भय भौतिक, सामाजिक या अज्ञात चीजों से हो सकता है। भौतिक भय पहचानने योग्य वस्तुओं या परिस्थितियों जैसे सांप, कॉक्रोच, बिजली चमकना, मृत जीव, ताबूत, ऊंचाई, गहरे पानी इत्यादि से हो सकता है। प्रायः ये भूतकाल के कष्टमय अनुभवों से उत्पन्न होते हैं। सामाजिक भय लोगों से संबंधित होते हैं।

मानव का सबसे बड़ा भय अस्वीकृति है जिसमें अवमानित होना, आलोचना होना और लोगों द्वारा तरह-तरह की बातें करना इत्यादि हो सकता है। सार्वजनिक व्याख्यान का भय तथा असफल होने का भय इसी श्रेणी के आते हैं। असफल होने का भय एक सामाजिक भय है जिससे लोग कभी-कभी आत्महत्या भी कर लेते हैं। अज्ञात से भय जैसे – मृत्यु का भय, भूत-प्रेतों का भय, नरक का भय और यहां तक कि देवताओं और ईश्वर की कल्पित धारणाओं से भी भय आते हैं। भय उस वस्तु या घटना में नहीं होता जिससे वह उत्पन्न होता है। एक ही वस्तु या घटना से कुछ लोगों को भय हो सकता है जबकि अन्य लोगों को नहीं।

सुचारु सांसारिक और आध्यात्मिक जीवन के लिए मनुष्य में भयहीनता आवश्यक है। प्रायः माता-पिता बच्चों को भयहीन होने को कहते हैं लेकिन जब बच्चे असावधानीपूर्वक साहसी होते हैं, तो उनके इस असावधानी को रोकने की कोशिश भी की जाती है। जंगली जानवरों, आग या ऊंचाई से कूदने आदि का भय तो सही लगता है किन्तु कुछ लोगों या परिस्थितियों का सामना करने में भय या ऐसा भय जिससे हम जीवन को अन्दर खींचते हैं या आक्रामक अथवा प्रतिरक्षात्मक हो जाते हैं – ये खराब भय है।

जीवन को सम्पूर्णता से जीने के लिए निर्भयता के गुण का पोषण करना बहुत आवश्यक है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि न्याय स्वयं के प्रति या दूसरों के प्रति हो तथा सभी विरोधों और खतरों के बीच सत्य बोलने की योग्यता हो – विश्वास और प्रेम में भी निर्भयता एक आवश्यक गुण है।

निर्भयता का अर्थ भय की कमी नहीं है। इसका अर्थ है कि हम भय पर विजय करने में सक्षम हैं और उससे ऊपर उठ सकते हैं। रवीन्द्र नाथ टैगोर लिखते हैं – ‘हम खतरों से सुरक्षित होने की प्रार्थना न करें किन्तु उनका सामना होने पर निर्भय होने की प्रार्थना करें।’

हम सही और गलत प्रकार की निर्भयता में कैसे भेद करें। सही निर्भयता का एक संकेत है कि जब हम गलत चीज करने से डरते हैं तब हम दूसरों को भी ऐसी गलत चीज नहीं करने देते हैं जैसा कि गांधी जी के जीवन में था। इसी तरह सही प्रकार की निर्भयता क्रियाशील होती है जब हम विरोध के सामने भी एक नैतिक सिद्धान्त का ही पालन करते हैं।

सामाजिक प्रथाओं और रुढ़ियों के विरुद्ध जाने का भी भय होता है। इसीतरह लोकमत का भी भय होता है। क्योंकि हम डरते हैं कि लोग हमारे कार्य को जाचेंगे और हमारी आलोचना करेंगे। बुद्ध कहते हैं कि आसक्ति, प्रीति, इच्छा, लालसा से शोक और भय पैदा होते हैं।

हम कर्म के नियम में जितना विश्वास करेंगे उतना ही अधिक हम निर्भय होंगे। हम अपने में शांति और अनाशक्ति का विकास करके भय पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। जिसने सार्वभौमिक विचारों की अनुभूति कर लिया है उससे सभी भय छूट जाते हैं। केवल वही व्यक्ति जिसने अपने में पूर्णतया अहिंसा उत्पन्न किया है वही सही मायने में निर्भय होता है। निर्भयता एक दैवीय गुण है। एक आध्यात्मिक मनुष्य निर्भय होता है। वह किसी से नहीं डरता और कोई उससे भी नहीं डरता। एक आध्यात्मिक व्यक्ति को अपनी स्वयं की आन्तरिक आवाज या प्रज्ञा के आधार पर निर्णय करना सीखना होता है। ऐसी प्रज्ञा उन्हीं द्वारा विकसित की जाती है जो अपनी दिव्यता के अलावा किसी अन्य को अपने ऊपर हावी नहीं होने देते।

(The Process of Self Transformation पुस्तक तथा The Theosophical Movement February 2020 की सामग्री पर आधारित)

विशेष क्रिया कलाप

- दि. 31.12.19–05.01.20 के बीच वाराणसी में 144वां अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ।
- दि. 31.01.20 व 01.02.20 को गाजियाबाद में ‘उपनिषद् और ताओ ते किंग’ पुस्तक पर अध्ययन शिविर आयोजित हुआ।
- काशी तत्व सभा वाराणसी और वसन्त कन्या महाविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से छात्राओं के एक समूह के लिए ‘थिऑसोफी द्वारा स्व-अनुभूति’ विषय पर 15 घण्टे का अध्ययन पाठ्यक्रम आयोजित हुआ। बंधु वेंकट नारायणन ने पाठ्यक्रम का संचालन किया तथा छात्राओं को ध्यान का अभ्यास भी कराया। इन छात्राओं तथा लॉज के कुछ नए सदस्यों को बंधु उमाशंकर पाण्डेय ने दि. 18.01.20 को थिऑसोफी और थिऑसोफिकल सोसाइटी का परिचय कराते हुए संबोधित किया। भाग लेने वाली छात्राओं को बंधु प्रदीप गाहिल, अध्यक्ष, भारतीय शाखा ने भी संबोधित किया और उन्होंने तथा बंधु उमाशंकर पाण्डेय ने इन छात्राओं को प्रशंसा प्रमाणपत्र प्रदान किये।
- बंधु शिवकुमार पाण्डेय फेडरेशन सचिव ने दि. 18.01.20 को दिल्ली के शंकर लॉज में ‘पुनर्जन्म का रहस्य’ विषय पर, दि. 19.01.20 को मुरादनगर लॉज में ‘थिऑसोफिकल सोसाइटी और थिऑसोफी के मूल सिद्धान्त’ विषय पर, दि. 21.01.20 को गाजियाबाद के बेसेन्ट लॉज में ‘तीन महान सत्यों के परिप्रेक्ष्य में मानव का विकास’ विषय पर, दि. 23.01.20 को हिन्दुस्तान लेटेक्स के पदाधिकारियों के साथ ‘नियति और स्वतंत्र संकल्प’ विषय पर